HD–05

December – Examination 2023

B.A. (Part III) Examination

HINDI LITERATURE

आधुनिक काव्य

Paper : HD-05

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **70***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ', 'ब' और 'स' तीन खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—अ **7×2=14**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है।

1. (i) आधुनिक काल की समय सीमा लिखिए।

   (ii) 'लम्बी' कविता की **दो** विशेषताएँ लिखिए।

   (iii) खण्डकाव्य की **दो** विशेषताएँ लिखिए।

खण्ड—स **2×14=28**

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **500** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 14 अंक का है।

10. लम्बी कविता की परम्परा एवं विकास पर विस्तृत लेख लिखिए।

11. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तृत लेख लिखिए।

12. 'प्रवाद पर्व' कविता के अनुभूति पक्ष को उदाहरण देकर समझाइए।

13. लम्बी कविता के रचना विधान के आधार पर 'ब्रह्मराक्षस' कविता की समीक्षा कीजिए।

(iv) 'परिवर्तन' कविता के रचनाकार का नाम लिखिए।

(v) मुक्तिबोध की **दो** लम्बी कविताओं के नाम लिखिए।

(vi) 'कुआनो नदी' कविता का वर्ण्य विषय लिखिए।

(vii) 'प्रवाद पर्व' के रचनाकार का नाम लिखिए।

खण्ड—ब **4×7=28**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 7 अंक का है।

2. आधुनिक काव्य की सामान्य पृष्ठभूमि को समझाइए।

3. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

बावड़ी की उन घनी गहराइयों में शून्य
ब्रह्मराक्षस एक पैठा है।
व भीतर से उमड़ती गूंज की भी गूंज
हड़बड़ाहट-शब्द पागल से
गहन-अनुमानिता
तन की मलिनता
दूर करने के लिए, प्रतिपल
पाप छाया दूर करने के लिए दिन रात
स्वच्छ करने/ब्रह्मराक्षस
घिस रहा है देह।

4. 'दो चट्टानें' कविता का अभिव्यंजनात्मक पक्ष स्पष्ट कीजिए।

5. 'ब्रह्मराक्षस' कविता के वर्ण्य विषय को समझाइए।

6. 'सरोज स्मृति' के मूल कथ्य को समझाइए।

7. 'परिवर्तन' कविता का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में लिखिए।

8. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

नाखून दिन पर दिन बढ़ते जा रहे हैं
और जमीन उसी अनुपात में बंजर होती जा रही है
और नदी हर दिल में उसी रफ्तार से शान्त
हर विवशता का उपहास सा करती।
अभी एक डॉगर बहता हुआ निकल गया।

9. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित न कर सका।
जान तो अर्थागमोपाय
पर रहा सदा संकुचित काय
लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर
हारता रहा, मैं स्वार्थ समर
शुचिते, पहनाकर चीनांशुक
रख सका न तुझे अतः दधिमुख